Dil Joi Ke Fazail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 455
Weekly Booklet : 455

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 22 साल पहले का बयान

दिलजोई के फ़ज़ाइल

सफ़हात : 21

ख़ुशी का फ़रिश्ता 09
दिलजोई की एक आसान सूरत 11
दिलजोई की मुख़्तलिफ़ सूरतें 17
20 साल तक नाबीना रहे 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दिलजोई के फ़ज़ाइल[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 21 सफ़हात का रिसाला "दिलजोई के फ़ज़ाइल" पढ़ या सुन ले उसे मुसलमानों के दिलों में ख़ुशियां दाख़िल करने वाला बना कर मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।
اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे ब रोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।

(مجمع الزوائد، 10/253، حدیث:17298)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

बूढ़ी औ़रत को दीदार हो गया

एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा में 1405 हि. की ह़ाज़िरी के दौरान मेरे (यानी अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के) एक पीर भाई मर्ह़ूम ह़ाजी इस्माईल ने मुझे येह

1 ... येह बयान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 22 रमज़ानुल मुबारक 1424 हि. ब मुत़ाबिक़ 17 नवम्बर 2003 ई को दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था। जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शोबे "बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

वाक़िआ सुनाया कि दो या तीन साल पहले तक़रीबन 85 साला एक ह़ज्जन सुनहरी जालियों के रू ब रू सलाम अ़र्ज़ करने ह़ाज़िर हुई और अपने टूटे फूटे अल्फ़ाज़ में सलातो सलाम अ़र्ज़ करना शुरूअ़ किया, नागाह एक ख़ातून किताब से देख कर निहायत उ़म्दा अल्क़ाब के साथ सलातो सलाम का नज़राना अ़र्ज़ कर रही थी, येह देख कर बेचारी अनपढ़ बूढ़ी औ़रत का दिल डूबने लगा, उस ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं तो पढ़ी लिखी नहीं हूं जो अच्छे अच्छे अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अ़र्ज़ कर सकूं, मुझ अनपढ़ का सलाम आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कहां पसन्द आएगा ! उस बूढ़ी औ़रत का दिल भर आया, रो धो कर चुप हो रही। रात जब सोई तो सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! क्या देखती है कि सिरहाने उम्मत के वाली, सरकारे आ़ली صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, ऱहमत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : तुम मायूस क्यूं होती हो ? सुन लो ! हम ने सब से पहले तुम्हारा सलाम क़बूल फ़रमाया।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ग़ुलामों की दिलजोई का कितना ख़याल फ़रमाते हैं कि किसी भी त़रह़ मेरे ग़ुलाम का दिल न टूटे।

तुम उस के मददगार हो तुम उस के त़रफ़दार जो तुम को निकम्मे से निकम्मा नज़र आए

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान पर क़ुरबान ! टूटे हुए दिल आप की बारगाह में मक़्बूल हैं और आप टूटे हुए दिलों की दिलजोई फ़रमाते हैं, मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बिल्कुल बजा फ़रमाया है :

सुनते हैं कि महशर में सिर्फ़ उन की रसाई है गर उन की रसाई है लो जब तो बन आई है
यूं तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो येह टूटे हुए दिल ही ख़ास उन की कमाई है
मत्लअ़ में येह शक क्या था वल्लाह रज़ा वल्लाह सिर्फ़ उन की रसाई है सिर्फ़ उन की रसाई है

अख़्लाक़े नबवी की एक झलक

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा अपने ग़ुलामों का दिल ख़ुश रखते और कभी किसी का दिल न तोड़ते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه जो तक़रीबन दस साल तक आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रहे, फ़रमाते हैं : मैं दस साल ख़िदमते अक़्दस में रहा लेकिन कभी भी मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से येह नहीं फ़रमाया कि येह काम तुम ने क्यूं किया ? और येह काम क्यूं नहीं किया ? (ابوداود، 4/324، حدیث:4774ملتقطاً)

सरवरे ज़ीशान, ऱहमते आ़लमियान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस बात का बड़ा ख़याल रखते थे कि किसी का दिल न टूटे। आह ! वोह कितने बुरे और नापसन्दीदा लोग हैं जो बिला वज्ह दूसरों का दिल तोड़ते रहते हैं, किसी को घूर कर, किसी को झाड़ कर और किसी को धक्का मार कर उस का दिल दुखाते हैं।

गर्दनें फलांगना

बाज़ लोग इस त़रह़ भी दूसरों का दिल दुखाते हैं कि ताख़ीर से आने के बा वुजूद मस्जिद की पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के लिये पिछली सफ़ों को फलांगते और दूसरों को धक्के मारते हुए वहां तक पहुंचने की कोशिश करते हैं, न जाने कितनों के दिल तोड़े, कितनों को धक्के दिये और कितनों को مَعَاذَاللہ ! कोहनी और लात मारी ह़ालांकि ऐसा करने से वाज़ेह़ त़ौर पर मना किया गया है।

चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : जिस ने जुमुआ़ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया। (ترمذی، 2/48، حدیث:513) इस के एक माना येह

हैं कि इस पर चढ़ चढ़ कर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे।[1]

सोचें तो सही कि अगर भगदड़ मचे और उस मज्मअ़ में कोई गिर जाए और उस पर लोग गुज़रें कोई जूते वाला, कोई चप्पल वाला भाग रहा है और कोई लात तो कोई घूंसा मार रहा है और वोह कुचलता रहे इस त़रह़ तो मेरा ख़याल है उस का ह़ल्वा हो जाए, येह कितना सख़्त मुआ़मला है इस लिये लोगों के दिल का बहुत ख़याल रखना है।

नेकियों के ज़िम्न में गुनाहों का इर्तिकाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेक काम करते हुए लोगों की दिल आज़ारी से बचना बहुत ज़रूरी है। कई नेकियां ऐसी होती हैं कि बन्दा सोचता है कि मैं उन्हें कर लूं मगर उन नेकियों के ज़िम्न में वोह बहुत से लोगों के दिल तोड़ता और गुनाहगार होता चला जाता है, शैत़ान ऐसे शख़्स पर हंसता है क्यूंकि नेकियों के ज़िम्न में दूसरों की दिल आज़ारियां करने वाला बेवुक़ूफ़ इन्सान समझता है कि मैं अल्लाह पाक को ख़ुश कर रहा हूं हालांकि वोह अल्लाह पाक को सख़्त नाराज़ कर के दोनों हाथों से अपने लिये जहन्नम के अंगारे समेट रहा होता है।

उसे इस मिसाल से समझिये कि नात ख़्वानी में ह़ाज़िर होना सवाब का काम है लेकिन अगर कोई रात दो बजे तक नात ख़्वानी में शरीक रहे और घर में मां नाराज़ हो कर इन्तिज़ार कर रही हो कि पता नहीं कब मेरा बेटा घर आएगा ? और फिर इसी फ़िक्र में उस ने बाप को भी न सोने दिया हो ह़ालांकि उन्हें सुब्ह़ नौकरी पर जाना हो, अब अगर कोई इस त़रह़ की नात ख़्वानियों में शिर्कत कर के समझे कि मैं

---

1 ... ह़दीस में लफ़्ज़ اتَّخَذَ جِسْرًا वाक़ेअ़ हुवा है इस को मारूफ़ व मज्हूल दोनों त़रह़ पढ़ते हैं और येह तर्जमा मारूफ़ का है और मज्हूल पढ़ें तो मत़लब येह होगा कि ख़ुद पुल बना दिया जाएगा यानी जिस त़रह़ लोगों की गर्दनें उस ने फलांगी हैं, उस को क़ियामत के दिन जहन्नम में जाने का पुल बनाया जाएगा कि उस के ऊपर चढ़ कर लोग जाएंगे। (ह़ाशिया बहारे शरीअ़त, 1/761, ह़िस्सा : 4)

बड़ी आला दर्जे की इबादत कर रहा हूं तो येह उस की बहुत बड़ी भूल है, ऐसा शख़्स मां बाप का दिल दुखाने की वज्ह से गुनाहगार और अज़ाबे नार का हक़दार होगा। याद रखिये ! नात ख़्वानी अगर्चे नेक काम है लेकिन येह एक मुस्तहब काम है जब कि मां बाप की इताअ़त फ़र्ज़ है।

मां बाप की इताअ़त कब तक की जाएगी ?

ऐ आशिक़ाने रसूल ! मां बाप की इताअ़त उस वक़्त तक करनी है जब तक वोह मासियत यानी अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी का हुक्म न दें। अगर मां बाप नमाज़ पढ़ने से रोकें तो अब उन की बात नहीं मानी जाएगी क्यूंकि नमाज़ न पढ़ने की सूरत में अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी होगी। इसी तरह अगर वालिदैन बिला इजाज़ते शरई मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ बढ़ने से मना करें और घर में नमाज़ पढ़ने का कहें तो इस सूरत में भी उन की बात नहीं मानी जाएगी, हां अगर रोकने की कोई शरई वज्ह हो मसलन मां बीमार है उसे सम्भालने वाला कोई नहीं तो ऐसी सूरत में घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त है। येह उसूल ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि कोई भी ऐसा नफ़्ली काम नहीं करना चाहिये कि जिस की वज्ह से मां बाप की ना फ़रमानी हो मसलन अगर मां बाप नफ़्ली हज करने से मना करें तो नहीं जा सकते, अगर जाएंगे तो गुनाहगार होंगे क्यूंकि मां बाप की इताअ़त फ़र्ज़ है।

लगाम किसी और के हाथ में है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमें इस मादरे गीती (यानी ज़मीन) पर बहुत फूंक फूंक कर क़दम रखना चाहिये, हम इस ज़मीन पर आ गए तो गोया हम ने अपने आप को बहुत बड़े इम्तिहान के लिये पेश कर दिया, ऐसा नहीं कि अब हमारी मर्ज़ी चलेगी, हम हरगिज़ अपनी मर्ज़ी के मालिक नहीं बल्कि हमारी लगाम किसी और

के हाथ में है। उसे यूं समझिये कि अगर किसी ने कहीं यौमिया आठ घन्टे के लिये नौकरी इख़्तियार की तो अब आठ घंटे के लिये उस की लगाम उस के सेठ के हाथ में है वोह जिस त़रफ़ चाहे मोड़ दे, अगर वोह अपने मुलाज़िम को पैसे गिनने का हुक्म दे तो उसे येह काम करना पड़ेगा, अगर चाय लाने का कहे तो मुलाज़िम को "जी हुज़ूर" कह कर चाय लेने के लिये जाना पड़ेगा।

याद रखिये ! बन्दा पाबन्द है, इस पर लगाम पड़ी हुई है और उस की डोर किसी और के हाथ में है, ख़ुदा की क़सम ! जब भी डोर खिंचेगी तो बन्दा बिल्कुल बेजान हो कर गिर पड़ेगा। बन्दा चाहता तो बहुत कुछ है कि येह भी कर डालूं और वोह भी कर डालूं, बड़े बड़े कारनामे सर अन्जाम देने और बड़े बड़े प्लाज़े बनाने को उस का दिल चाहता है मगर हर बन्दा येह सब कर नहीं पाता क्यूंकि उस की लगाम किसी और के हाथ में है। इस दुनिया में कोई नहीं चाहता कि वोह बीमार हो जाए लेकिन बीमार हो ही जाता है, कोई नहीं चाहता कि उस के सर में दर्द हो लेकिन सर में दर्द हो ही जाता है क्यूंकि लगाम किसी और के हाथ में है। देखिये ! वैसे तो बन्दा बड़ी फूं फां करता है लेकिन अगर दर्दे सर हो जाए तो उस का इ़लाज उस के हाथ में नहीं होता और अगर बुख़ार हो जाए तो बिस्तर पर पड़ जाता है क्यूंकि उस की लगाम किसी और के हाथ में है। कौन चाहता है कि वोह बूढ़ा हो जाए ? हर एक येही चाहता है कि वोह बिल्कुल जवान रहे लेकिन बुढ़ापा आ कर ही रहता है और फिर जब बूढ़ा शख़्स बुढ़ापे से झांक कर अपनी जवानी को देखता है तो ह़सरत से आहें भरता है। बे शक किसी के पास अरबों खरबों हों, वोह पैसों से सिर्फ़ दवा ख़रीद सकता है शिफ़ा नहीं, इसी त़रह़ पैसों के ज़रीए न तो बुढ़ापे को टाला जा सकता है और न ही जवानी ख़रीदी जा सकती है, अरबों खरबों रुपै दे कर भी जवानी का एक दिन बल्कि एक घंटा भी नहीं ख़रीदा जा सकता, जब बन्दा इतना बे बस है तो फिर क्यूं न अल्लाह पाक की बारगाह में झुका रहे, उस की ना फ़रमानी से बचे और उसी का हो कर रहे

जिस के हाथ में सब कुछ है और बरोज़े क़ियामत सब ने उस की बारगाह में हाज़िर होना है।

दिलजोई अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में दिलजोई के बारे में सुना कि दिलजोई इतनी अहम है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी किसी का दिल नहीं दुखाया। वोह बन्दा कितना बुरा है जो अपने नफ़्स की वज्ह से ख़्वाह मख़्वाह लोगों के दिल दुखाता है, किसी का मज़ाक़ उड़ाता है तो किसी पर त़न्ज़ करता है, किसी पर फबकी कस्ता है तो किसी को डराता धमकाता है, किसी को तश्वीश में डालता है तो किसी को ग़लत़ ख़बर दे कर ख़ौफ़ज़दा करता है, अलग़रज़ त़रह़ त़रह़ से दिल दुखाता है।

मुसलमान की दिलजोई हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत है, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिलजोई के बेशुमार अ़मली नुमूने पेश किये, जिन में से एक येह भी है कि जब कोई आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में हाज़िर होता तो आप उस के लिये सरक जाते। (شعب الایمان، 6/468، حدیث:8933) बाज़ औक़ात ऐसा भी होता कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से फ़रमाते : अपने भाई के लिये सरक जाओ। (مسلم، ص923، حدیث:5684 ماخوذاً) सरकने की ह़क़ीक़ी ह़िक्मत क्या है ? अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं अलबत्ता एक ह़िक्मत येह समझ आती है कि ऐसा करने से आने वाले मुसलमान भाई के लिये जगह कुशादा हो जाएगी और वोह आराम से बैठ सकेगा नीज़ इस में मुसलमान की दिलजोई भी है। ज़रा ग़ौर कीजिये ! जिस ख़ुश नसीब के लिये ख़ुद प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरकते होंगे उस का दिल कितना ख़ुश होता होगा ! बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना बन जाता होगा और वोह सोचता होगा कि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इतनी अहमियत दी है।

देखिये ! किसी आने वाले के लिये थोड़ा सा सरक जाना ऐसी नेकी है जिस में कुछ ख़र्च नहीं होता मगर हमारे यहां येह सुन्नत तक़रीबन ख़त्म हो चुकी है बल्कि हमारी ह़ालत तो येह है कि किसी को आता देख कर इस ख़ौफ़ से मज़ीद फैल कर बैठ जाते हैं कि उस के बैठने से कहीं जगह न तंग पड़ जाए, यूं हम सरकने के बजाए उस के लिये मज़ीद जगह तंग कर देते हैं ह़ालांकि ह़दीसे पाक में "मोमिन के लिये नर्म हो जाने" की तरग़ीब दिलाई गई है। (مسلم، ص1072، 1073، حدیث: 6601، 6602 ماخوذاً) मगर हम सख़्त हो जाते हैं।

सरकने के दो फ़ायदे

इस्लामी भाइयों ने मुझे (यानी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को) बारहा देखा होगा कि फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स के दौरान जब मुबल्लिग़ एलान करता है कि "क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइए" तो मैं थोड़ा सा सरक जाता हूं यहां तक कि अगर वोह तीन बार एलान करता है तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं तीन मरतबा सरकता हूं। सरकने से दो फ़ायदे होते हैं : ﴾1﴿ मुबल्लिग़ की ह़ौसला अफ़ज़ाई ﴾2﴿ कई इस्लामी भाई मुझे सरकता हुवा देख कर मुस्कुराते और ख़ुश होते हैं तो यूं सब के दिलों में ख़ुशी दाख़िल होती है जिस का मुझे اِنْ شَآءَاللّٰه सवाब भी मिलेगा।

मुबल्लिग़ के एलान करने पर थोड़ा सरक जाया करें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जब दर्सो बयान से पहले मुबल्लिग़ एलान करे कि "क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइए" तो थोड़ा आगे की त़रफ़ सरक जाया करें कि उस से मुबल्लिग़ का सीना ख़ुशी से मदीना बन जाएगा और वोह समझेगा कि लोग मेरी बातों को अहमियत दे रहे हैं। याद रहे ! दीने इस्लाम में मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने को बड़ी अहमियत दी गई है, इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अगर कोई माल के ज़रीए अपने मुसलमान भाई का दिल ख़ुश नहीं कर

सकता तो उसे हुक्म दिया गया कि ख़न्दा पेशानी और हुस्ने अख़्लाक़ के ज़रीए इस का दिल ख़ुश करे, चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : मुसलमान के सामने मुस्कुराना भी सदक़ा है। (ترمذی،3/384،حدیث:1963) एक और ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया : तुम अपने माल के ज़रीए लोगों को ख़ुश नहीं कर सकते लिहाज़ा ख़न्दा पेशानी और हुस्ने अख़्लाक़ के ज़रीए उन्हें ख़ुश रखा करो। (شعب الایمان،6/253،حدیث:8054)

ख़ुशी का फ़रिश्ता

मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने के क्या कहने ! चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है तो अल्लाह पाक उस ख़ुशी से एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाता है जो अल्लाह पाक की इ़बादत और तौह़ीद बयान करता है और फिर जब बन्दा मर जाता है तो येह ख़ुशी का फ़रिश्ता उस की क़ब्र में आ कर पूछता है : क्या तुम मुझे पहचानते हो ? बन्दा कहता है : आप कौन हैं ? तो ख़ुशी का फ़रिश्ता जवाब देता है : मैं इस ख़ुशी की शक्ल हूं जो तू ने फ़ुलां मोमिन को अ़त़ा की थी, अब मैं वह़शत (यानी क़ब्र की घबराहट) में तुझे राह़त पहुंचाऊंगा, तुझे तेरी ह़ुज्जत (यानी मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात) बताऊंगा, क़ौले साबित (यानी ह़क़ बात) से तुझे साबित क़दमी अ़त़ा करूंगा, बरोज़े क़ियामत तेरे पास आ कर तेरी शफ़ाअ़त करूंगा और जन्नत में तुझे तेरा मक़ाम दिखाऊंगा।

(शर्हुस्सुदूर, स. 159)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना कितने बड़े अज्र का बाइ़स है, इस लिये दर्सो बयान करने वाला मुबल्लिग़ भी बड़ा ख़ुश नसीब है कि ना जाने वोह कितनी ख़ुशी की बातें बता कर मुसलमानों के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है, कितना सवाब कमाता है और कितने

ख़ुशी के फ़रिश्ते उस के लिये पैदा किये जाते होंगे। इन्फ़िरादी कोशिश करने वाला तो बड़े कमाल का आदमी है कि वोह लोगों से मुस्कुरा कर मिलता है और उन के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करता है। याद रखिये ! जो इस्लामी भाई मिलन्सार होता है वोह वक़्तन फ़वक़्तन लोगों की दिलजोई का सामान करता रहता है, इस के बर अक्स जो लोगों से मुंह फुला कर मिलता है और बहुत से मुसलमानों को लिफ़्ट नहीं करवाता वोह बहुत सारे सवाबों से महरूम रह जाता है।

क़ौले साबित से मुराद

हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की रिवायत में फ़रमाया गया कि ख़ुशी से पैदा होने वाला फ़रिश्ता जब क़ब्र में आएगा तो कहेगा : "क़ौले साबित से तुझे साबित क़दमी अ़ता करुंगा" याद रहे ! "क़ौले साबित" से मुराद हक़ बात (यानी कलिमए ईमान) है जिस पर अहले ईमान को अल्लाह पाक की रहमत से साबित क़दमी नसीब होती है जैसा कि पारह 13 सूरए इब्राहीम की आयत नम्बर 27 में इरशाद होता है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात पर दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मोमिन की येह शान है कि चाहे कैसी ही मुसीबतें आ जाएं वोह साबिर ही रहता है और चाहे कुछ भी हो जाए दीने इस्लाम का दामन नहीं छोड़ता यहां तक कि उस की ज़िन्दगी का ख़ातिमा हो जाता है, फिर वोह आख़िरत की मन्ज़िलों में से अव्वल मन्ज़िल (यानी क़ब्र) में पहुंच कर अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से मुन्कर नकीर के सुवालात के वक़्त साबित क़दम रहता (यानी दुरुस्त जवाबात देता) है, फिर उस की क़ब्र वसीअ़ कर दी जाती है और उस में जन्नत की हवाएं और

ख़ुश्बूएं आती हैं, क़ब्र से अन्धेरा दूर हो जाता है और वोह नूर नूर हो जाती है, आस्मान से निदा आती है : मेरे बन्दे ने सच कहा : अल्लाह पाक हम सब को "क़ौले साबित" पर साबित क़दम रखे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दिलजोई की एक आसान सूरत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारी ज़िन्दगी में दिलजोई के बहुत से ऐसे मवाक़ेअ़ आते हैं जिन में कोई पाई पैसा ख़र्च नहीं करना पड़ता, किसी क़िस्म की मेह़नत नहीं करनी पड़ती और ना ही कोई ज़ह़मत उठानी पड़ती है मसलन किसी ने आप से कहा : "मुझे फ़ुलां जगह जाना है एड्रेस समझा दीजिये।" अब अगर आप ने मुस्कुरा कर उसे एड्रेस समझा दिया या उस के साथ दो क़दम चल कर मत़लूबा गली बता दी तो येह भी मुसलमान की दिलजोई की एक सूरत और सवाब का काम है। इसी त़रह़ कोई बेचारा वज़नी सामान उठा कर सर या कन्धे पर रखना चाह रहा है मगर रख नहीं पा रहा तो उठा कर उस के सर पर रखवा दीजिये बल्कि हो सके तो अपने कन्धे पर उठा कर मत़लूबा मक़ाम तक पहुंचा दीजिये।

अगर दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता इस्लामी भाई ऐसा करेंगे तो उस के बहुत से फ़वाइद ह़ासिल होंगे मसलन जिस का बोझ उठाया जाएगा उस के दिल से दुआ़एं निकलेंगी और वोह लोगों को बताएगा कि दावते इस्लामी वाले बहुत अच्छे होते हैं और फिर उन्हें अपना वाक़िआ़ सुनाएगा कि एक बार मैं अपना वज़नी सामान नहीं उठा पा रहा था तो एक दावते इस्लामी वाले ने मेरा वज़नी सामान अपने कन्धे पर उठा कर मेरे घर तक पहुंचा दिया। ماشاءاللہ दावते इस्लामी वाले बहुत दिलजोई और ग़मख़्वारी करने वाले होते हैं, यूं जिस का वज़न उठाया शायद वोह दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाए और इस छोटी सी दिलजोई के सबब उस की नस्लें सुधर जाएं।

इस के बरअ़क्स अगर कोई दावते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता किसी इस्लामी भाई को सामान उठा कर सर या कन्धे पर रखवाने की गुज़ारिश करे और वोह उस को लिफ़्ट न करवाए तो हो सकता है ऐसा करने से वोह बदज़न हो जाए और अपने बच्चों को बोले : "देखो बेटा ! दावते इस्लामी वालों के पास मत जाना येह अच्छे लोग नहीं होते, एक बार मेरी त़बीअ़त ख़राब थी और मैं अपना सामान नहीं उठा पा रहा था तो मैं ने एक दावते इस्लामी वाले को मदद के लिये आवाज़ दी तो वोह सियाना बन गया और जान बूझ कर ख़ुद को ऐसा ज़ाहिर किया कि जैसे उस ने मेरी आवाज़ को सुना ही नहीं, येह बड़े सख़्त और ज़ालिम लोग होते हैं वग़ैरा वग़ैरा।" देखिये ! थोड़ी सी बे एहतियात़ी की वज्ह से सामने वाला مَعَاذَاللہ ! बद गुमानी वग़ैरा से गुनाहों में मुब्तला हो सकता है।

बच्चों की भी दिलजोई कीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिलजोई का मुआ़मला सिर्फ़ बड़ों के साथ ही ख़ास नहीं बल्कि बच्चों के साथ भी होना चाहिये और जहां तक हो सके सब बच्चों के साथ यक्सां सुलूक इख़्तियार किया जाए लेकिन हमारी अक्सरियत इस मुआ़मले में ग़ैर मोह़तात़ है, वोह इस त़रह़ कि हम किसी बच्चे से ज़ियादा प्यार करते हैं और किसी से कम, जिस के बाइ़स बच्चों में एहसासे महरूमी पैदा होता है। देखिये ! आ़म त़ौर पर छोटा बच्चा वालिदैन को ज़ियादा अ़ज़ीज़ होता है मसलन अगर एक बच्चा तीन साल का है और दूसरा डेढ़ साल का, तो जो डेढ़ साल का है उस पर मां बाप को ज़ियादा प्यार आएगा लेकिन अगर मां बाप सिर्फ़ उसी को चूमते, बहलाते और खिलौने ला कर देते रहे तो तीन साल वाला बच्चा ब ज़ाहिर मां बाप को कुछ नहीं बोलेगा लेकिन ग़ैर महसूस त़रीक़े से उस के दिल में मां बाप के लिये नफ़रत बैठती चली जाएगी, फिर जब बुढ़ापे में मां बाप को उस की ज़रूरत होगी तो

वोह इस बात का इज़्हार भी कर सकता है, हो सकता है उस वक़्त तक डेढ़ साल वाला बच्चा दुनिया से रुख़्सत हो जाए या वोह इस लिये बाग़ी बन जाए कि जब तीसरा बच्चा पैदा हुवा था तो मां बाप ने उसे भी नज़र अन्दाज़ कर दिया था और सारी तवज्जोह तीसरे बच्चे पर मर्कूज़ कर दी थी, फिर जब चौथा बच्चा पैदा हुवा था तो मां बाप ने तीसरे बच्चे को भी नज़र अन्दाज़ कर दिया था और सारी तवज्जोह चौथे बच्चे पर की थी तो यूं एक एक कर के सारे बच्चे मां बाप से बदज़न होते चले जाएंगे और बुढ़ापे में बहुत महंगे पड़ेंगे, बेचारे मां बाप की ना फ़रमानी कर के अपनी आख़िरत ख़राब करेंगे मगर येह सब कुछ मां बाप की बहुत अ़र्से पहले की हुई नादानी की वज्ह से होगा।

बच्चों को कुछ न कुछ शुऊ़र होता है

याद रखिये ! बच्चे नज़र आने में अगर्चे छोटे होते हैं लेकिन उन को कुछ न कुछ शुऊ़र ज़रूर होता है जभी तो मां बाप को पहचानते और उन के पास भाग भाग कर आते हैं, अगर उन्हें शुऊ़र न होता तो वोह मां बाप के पास भाग भाग कर क्यूं आते और दूसरों के बुलाने पर उन से ख़ौफ़ क्यूं खाते ? अगर बिल्कुल छोटे और ना समझ बच्चे को बाप के इ़लावा कोई दूसरा शख़्स उठाए तो वोह रोता, बाप की त़रफ़ देख कर हाथ लहराता और अपनी तोतली ज़बान में रो रो कर अश्कों की ज़बानी फ़रियाद करता है कि अब्बू ! मुझे आप उठाइये !

पता चला कि बच्चे में थोड़ी बहुत समझ ज़रूर होती है जिस के ज़रीए वोह अपने मां बाप के रवय्ये को नोट करता है लेकिन बेचारा बेबस और लाचार होने के सबब न कुछ बोल सकता है और न ही किसी से फ़रियाद कर सकता है मगर जब वोह बड़ा होगा तो अपने मां बाप के रवय्ये के बारे में दूसरों को ज़रूर बताएगा।

मुझ (यानी अमीरे अहले सुन्नत) से मुलाक़ात के दौरान बहुत से लोग इस बात का इज़्हार करते हैं कि हमें बचपन में न मां का प्यार मिला और न ही बाप का। चूंकि दावते इस्लामी एक अ़वामी तह़रीक है और इस का अ़वाम से वासित़ा है इस लिये मुबल्लिग़ीन को वक़्तन फ़वक़्तन इस त़रह़ की बातें सुनने को मिलती रहती हैं। अगर्चे हर त़रह़ के लोग दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हैं लेकिन आ़म त़ौर पर मुआ़शरे के कुचले और दिली त़ौर पर टूटे हुए अफ़राद उस की त़रफ़ ज़ियादा आते हैं जब कि ख़ुशह़ाल, फ़ारिग़ुल बाल और ऐ़शो नाज़ में पलने वाले बहुत कम रुख़ करते हैं। ज़ियादा तर ग़रीब त़बक़ा दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल की त़रफ़ रुजूअ़ करता है अगर्चे अमीर लोग भी दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हैं और اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने दाढ़ी सजाई, ज़ुल्फ़ें रखीं, इ़मामा शरीफ़ सजाया और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और क़ाफ़िलों में शिर्कत का सिल्सिला जारी रखा होता है मगर ग़रीबों के मुक़ाबले में ऐसों की तादाद बहुत कम है, यूं समझिये अगर एक मालदार दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता है तो इस के मुक़ाबले में 50 बल्कि 75 ग़रीब अफ़राद वाबस्ता होंगे तो यूं मालदारों की तादाद बहुत कम है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बच्चों से मह़ब्बत

येह ह़क़ीक़त है कि छोटा बच्चा मां बाप को बहुत ज़ियादा प्यारा होता है और दिल चाहता है कि उसे प्यार किया जाए लेकिन जब मैं (यानी अमीरे अहले सुन्नत) अपने बच्चों को प्यार करता था तो मेरी येही कोशिश होती थी कि सब को प्यार करूं क्यूंकि अगर मैं सब बच्चों की मौजूदगी में सिर्फ़ एक ही को प्यार करता तो मुम्किन था कि दूसरे बच्चों के दिलों में मेरी मह़ब्बत कम होती चली जाती। एक से ज़ाइद बच्चों को प्यार करने का त़रीक़ा येह है कि मसलन अगर तीन बच्चे हैं और आप उन में से एक को चूम रहे हों तो दूसरे को सीने से चिम्टा लीजिये और तीसरे को पकड़ कर थोड़ा हिलाइये, अगर आप इस त़रह़ बच्चों से प्यार करना सीख जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه कोई भी बच्चा बड़ा हो कर बाग़ी नहीं बनेगा।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दिलजोई का अन्दाज़

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) दावते इस्लामी के आग़ाज़ में कि जब क़ाफ़िले की इस्तिलाह़ नहीं थी और क़ाफ़िले को वफ़्द बोला जाता था उस दौर में ज़ियादा तर बयानात मैं ख़ुद ही किया करता था। अगर्चे उस वक़्त "मदनी मक़्सद" के लिये अल्फ़ाज़ मख़्सूस नहीं थे मगर मेरे ज़ेहन में येही होता था कि "मुजे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं ने शैत़ान और नफ़्से अम्मारा के ख़िलाफ़ जिहाद जारी रखा हुवा है और ह़दीसे पाक में है : اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهٗ यानी मुजाहिद वोह है जो अपने नफ़्स के साथ जिहाद करे। (مسند امام احمد، 9/249، حدیث:24013 ملتقطاً)

बहरह़ाल छुट्टी से एक दिन पहले मैं (यानी अमीरे अहले सुन्नत) येह एलान किया करता था कि कल छुट्टी है हम दोपहर को इतने बजे घर से रवाना होंगे और फ़ुलां मस्जिद में अ़स्र, फ़ुलां मस्जिद में मग़रिब और फ़ुलां मस्जिद में इ़शा का बयान होगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरे एलान करने पर 80, 90 बल्कि 100 इस्लामी भाई जमा हो जाया करते थे और फिर मुख़्तलिफ़ मसाजिद में जा कर नेकी की दावत की धूमें मचाया करते थे। अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से उस वक़्त भी मेरा मुसलमानों की दिलजोई का ज़ेहन था, सुन्नतों भरे बयानात सुनने के लिये बहुत से नए नए लोग आते थे और मेरी कोशिश होती थी कि जो एक बार आ गया सो आ गया अब उसे दीनी माह़ौल से वापस नहीं जाना चाहिये, इसी मक़्सद के तह़त मैं इस्लामी भाइयों से मिज़ाज पुर्सी करता और राह चलते हुए अपना एक हाथ किसी इस्लामी भाई के कन्धे पर रखता और दूसरे हाथ से किसी को थाम लेता था और इस दौरान तीसरे इस्लामी भाई से बात चीत शुरूअ़ कर देता, यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरा शुरूअ़ से ही मुसलमानों की दिलजोई का ज़ेहन है।

दिलजोई ख़ाली बातें करने या चाह लेने से नहीं होती बल्कि जब तक उस काम के लिये ख़ुदी को नहीं मिटाएंगे, उस काम के हो कर नहीं रह जाएंगे और अ़मली त़ौर पर उसे सर अन्जाम देने की पूरी कोशिश नहीं करेंगे तब तक येह काम नहीं होगा। अगर हम मुसलमानों की दिलजोई करने वाले बन गए तो اِنْ شَآءَاللّٰه हमारे लिये सवाबे जारिया का ढेर लग जाएगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! दावते इस्लामी के बेशुमार मुबल्लिग़ीन तय्यार हो कर नेकी की दावत की धूमें मचा रहे हैं, मुझे अल्लाह पाक की रह़मत से उम्मीद है कि उस के फ़ज़्लो करम से इस अ़ज़ीम काम में मेरा ह़िस्सा भी शामिल है क्यूंकि اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मैं ने भी ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिशें की हैं।

मैं तो तन्हा ही चला था जानिबे मन्ज़िल मगर इक एक आता गया कारवां बनता गया

मुसलमान की दिलजोई

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अपना येह ज़ेहन बना लीजिये कि किसी का दिल नहीं तोड़ना बस सभी की दिलजोई करनी है। याद रहे ! जब तक मस्लह़ते शरई़ न हो लोगों का दिल ख़ुश किये चले जाना है और जहां मस्लह़ते शरई़ हो यानी शरीअ़त दिलजोई न करने का हुक्म दे वहां किसी का लिह़ाज़ न किया जाए। ऐ काश ! हम मुसलमानों की दिलजोई करना सीख लें, उन का दिल तोड़ना, झाड़ना और बिला वज्ह घूरना बन्द कर दें। याद रखिये ! किसी को घूर कर उस का दिल दुखाना भी गुनाह है लेकिन आज कल इस त़रह़ घूरा जाता है कि जैसे घूरना कोई मस्अला ही नहीं है। ऐ काश ! हम मोमिनों के लिये नर्म और कुशादगी वाले बन जाएं ! जब हमारी मजलिस में कोई आए तो हम थोड़ा सा सरक कर उस के लिये बैठने की जगह बनाने वाले बन जाएं। इसी त़रह़ कहीं आने जाने का मौक़अ़ मिले तो दौराने सफ़र बस या ट्रेन में अपनी सीट पर मज़े से बैठने के बजाए किसी खड़े हुए मुसलमान को अपनी जगह पेश कर दीजिये ताकि कुछ देर के लिये वोह बैठ जाए और कुछ देर के लिये आप बैठ जाएं, यूं ईसार कर के मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल की जा सकती है।

दिलजोई की मुख़्तलिफ़ सूरतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर ग़ौर किया जाए तो बहुत से त़रीक़ों से मुसलमान का दिल ख़ुश किया जा सकता है मसलन कभी किसी को तोह़फ़ा दे दिया जाए कि येह भी दिलजोई का ज़रीआ़ है। इसी त़रह़ किसी मुसलमान ने मश्वरा त़लब किया तो उसे अच्छा मश्वरा दे दिया जाए कि इस से भी उस का दिल ख़ुश हो जाएगा। ऐसे ही रिश्वत वग़ैरा ना जाइज़ ज़राएअ़ से बचते हुए किसी मुसलमान की नौकरी लगवा दी जाए कि ऐसा करने से उस का दिल ख़ुश होगा और उस के घर वाले नौकरी लगवाने वाले को दुआ़एं देंगे। यूं ही अपनी जेब से किसी इस्लामी भाई को सुन्नतें सीखने और सिखाने के क़ाफ़िलों में सफ़र करवा दिया जाए कि इस त़रह़ करने से उस का दिल ख़ुश होगा और वोह जो कुछ क़ाफ़िले से सीख कर आएगा उस का सवाब भेजने वाले को भी मिलेगा, नीज़ अगर क़ाफ़िले में सफ़र करने की बरकत से वोह इस्लामी भाई दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो गया तो अब उस के ज़रीए जितना भी दीन का काम होगा اِنْ شَآءَاللّٰه क़ाफ़िले में भेजने वाले को भी उस का सवाब मिलेगा।

मक्तबतुल मदीना के कुतुबो रसाइल भी तोह़फ़े में दिये जा सकते हैं कि इस की भी बड़ी बरकतें हैं। याद रहे ! दिलजोई के येह त़रीक़े ब ज़ाहिर बहुत सस्ते हैं लेकिन उन का आख़िरत में बहुत ज़ियादा फ़ायदा होगा। चुनान्चे

मदनी मुज़ाकरे की मदनी बहार

मुल्क से बाहर के इस्लामी भाई को मैं (यानी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) ने मदनी मुज़ाकरे की बहुत सी कैसिटें पेश कीं, जब वोह पांच सुन चुके तो फ़रमाने लगे, उन में तो अच्छे अच्छे त़िब्बी नुस्ख़े, शरई मालूमात, तारीख़ी मालूमात और फ़िक़्ही सुवालात के जवाबात हैं, आप ने येह कैसिटें मुझे पहले क्यूं नहीं दीं ? अब मैं सब कैसिटें सुनूंगा।

इस से येह भी मालूम हुवा कि आप मदनी मुज़ाकरा सुन्वा के भी दिल ख़ुश कर सकते हैं।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ लोगों की किस क़दर दिलजोई फ़रमाया करते थे इस का अन्दाज़ा इस वाक़िए से लगाया जा सकता है, चुनान्चे

20 साल तक नाबीना रहे

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक नेक सीरत लड़के की एक लड़की से निस्बत (यानी मंगनी) क़ाइम की गई जो बहुत ही ह़सीनो जमील और ख़ूबसूरत थी, अचानक उस लड़की को चेचक के दाने निकल आए और वोह बदसूरत हो गई। उस लड़की के घर वाले घबरा गए कि अब क्या होगा ? इतने में उस लड़की के घर वालों को ख़बर पहुंची कि दूल्हे की बीनाई आहिस्ता आहिस्ता कमज़ोर होने लगी है और फिर इत्तिलाअ़ आई को वोह नाबीना हो चुका है। लड़की के घर वाले मुतमइन हो गए कि अगर हमारी लड़की को बीमारी लाह़िक़ हो गई है तो लड़का भी नाबीना हो गया है, फिर उन दोनों की शादी हो गई और 20 साल तक ख़ुशी ख़ुशी घर चला। 20 साल बाद जब लड़की का इन्तिक़ाल हुवा तो उस नाबीना की आंखें रौशन हो गईं, सब ह़ैरत में पड़ गए कि माजरा क्या है ? जब उन से पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया : उस लड़की को चेचक की बीमारी लाह़िक़ हो गई थी और उस के घर वालों का दिल डूब गया था तो मैं ने उन की दिलजोई की ख़ातिर 20 साल तक अपने आप को अन्धा किये रखा ताकि उन का दिल न टूटे। (احیاء العلوم، 3/127 مفہوماً)

ग़ौर कीजिये ! नेक सीरत दूल्हा दिलजोई की ख़ातिर 20 साल तक नाबीना बना रहा जब कि हम मामूली सा ईसार करने के लिये तय्यार नहीं होते। हम मीठा

मीठा हपहप और कड़वा कड़वा थू थू करने वाले हैं हालांकि ऐसा नहीं होना चाहिये। जहां हमें इतनी राहतें और नेमतें मुयस्सर हैं वहां अगर कभी कभार कोई तंगी या आज़माइश आ जाए तो सब्र व इस्तिक़ामत से काम लेते हुए अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिये और ना शुक्री से बचना चाहिये। इस ज़िम्न में एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

महमूद व अयाज़ और ककड़ी की क़ाश

मन्क़ूल है, मश्हूर आशिक़े रसूल बादशाह, सुल्तान महमूद गज़्नवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास कोई शख़्स ककड़ी ले कर हाज़िर हुवा। सुल्तान ने ककड़ी क़बूल फ़रमा ली और पेश करने वाले को इन्आम दिया। फिर अपने हाथ से ककड़ी की एक क़ाश तराश कर अपने मन्ज़ूरे नज़र ग़ुलाम अयाज़ को अता फ़रमाई। अयाज़ मज़े ले ले कर खा गया। फिर सुल्तान ने दूसरी फांक काटी और ख़ुद खाने लगे तो वोह इस क़दर कड़वी थी कि ज़बान पर रखना मुश्किल था। सुल्तान ने हैरत से अयाज़ की तरफ़ देखा और फ़रमाया : अयाज़ ! इतनी कड़वी फांक तू कैसे खा गया ? वाह ! तेरे चेहरे पर तो ज़र्रा बराबर नागवारी के असरात भी नुमूदार न हुए ? अयाज़ ने अर्ज़ किया : आलीजाह ! ककड़ी वाक़ेई बहुत कड़वी थी। मुंह में डाली तो अक़्ल ने कहा : "थूक दे।" मगर इश्क़ बोल उठा : "अयाज़ ख़बरदार ! येह वोही हाथ हैं जिन से रोज़ाना मीठी अश्या खाता रहा है, अगर एक दिन कड़वी चीज़ मिल गई तो क्या हुवा ! इस को थूक देना आदाबे महब्बत के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा इश्क़ की रहनुमाई पर मैं ककड़ी की कड़वी क़ाश खा गया।" अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। (रहबरे ज़िन्दगी, स. 167)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ग़ुलाम ने अपने आक़ा की दिलजोई की ख़ातिर ककड़ी की कड़वी क़ाश खा ली जब कि हमारी सूरते हाल येह है कि अमल करना तो दूर की बात है हमें दिलजोई के बारे में मालूमात भी नहीं होतीं।

हो सकता है ऐसे वाक़िआत सुन कर हमारे ज़ेहन में दिलजोई की अहमियत उजागर हो जाए और यक़ीन मानिये अगर हम अपने घर, महल्ले और जहां कारोबार करते हैं वहां जाइज़ तरीक़े से मुसलमानों की दिलजोई करने, एक दूसरे से मुस्कुरा कर मिलने, क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाने और नेकी की दावत आम करने वाले बन गए तो اِنْ شَآءَاللّٰه हमारा मुआशरा तेज़ी के साथ सुधरता चला जाएगा। याद रखिये ! ना जाइज़ तरीक़े पर किसी की दिलजोई नहीं की जाएगी मसलन अगर बाप अपने बेटे से कहे कि फ़ुलां की जेब काट कर आओ तो चाहे अब बाप का दिल टूटे या कलेजा फूटे बेटा बाप की बात न माने क्यूंकि येह हराम काम है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों की दिल आज़ारी से बचना और भलाई के साथ बात चीत करना मग़्फ़िरत का ज़रीआ भी बन सकता है, चुनान्चे

भलाई के साथ बात करने के सबब बख़्शिश

शैख़ सअ़दी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया, उस के इन्तिक़ाल के बाद किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ यानी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? जवाब दिया : मैं ने कभी किसी को नाराज़ नहीं किया, हर एक को ख़ैर के साथ याद किया और भलाई के साथ बात की तो अल्लाह पाक ने इस अ़मल के सबब मुझे ख़ुश कर दिया और मेरी बख़्शिश फ़रमा दी। (بوستان سعدی، ص149 ماخوذاً)

ऐ काश ! हम भी लोगों के दिल ख़ुश करें ताकि अल्लाह पाक हम से ख़ुश हो जाए और जब अल्लाह पाक ख़ुश होगा तो हमें भी ख़ुशियां अ़ता फ़रमाएगा। अगर हम लोगों को बिला वज्ह नाराज़ करेंगे तो हो सकता है कि अल्लाह पाक हम से नाराज़ हो जाए और अगर अल्लाह पाक हम से नाराज़ हो गया तो फिर हमें उस की पकड़ से कोई नहीं बचाएगा लिहाज़ा हमें अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश करना है। जब हम इस तरह़ ख़ुशी का परचम लहराने,

नफ़रतें मिटाने और महब्बतों को फैलाने का काम शरूअ कर देंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه वोह दिन दूर नहीं है कि हर तरफ़ सुन्नतों की बहारें आ जाएंगी, क़ाफ़िलों की क़तारें लग जाएंगी और हर तरफ़ नेक आमाल की धूमें मच जाएंगी।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारा मदनी मक़्सद भी येही है कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه" लिहाज़ा इस मक़्सद को पूरा करने के लिये क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मामूल बना लीजिये और रोज़ाना नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जमा करवाने का मामूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इस की बरकत से आप नेक और परहेज़गार बन कर मुआशरे में उभरेंगे। चूंकि नेक आमाल पर अमल करने वाला अल्लाह पाक के करम से नेक व परहेज़गार बन जाता है इस लिये शैतान आप को नेक आमाल का रिसाला न तो ख़रीदने देगा और ना ही पढ़ने देगा। चाहे आप का अमल 12 नेक आमाल पर हो आप अमल जारी रखिये اِنْ شَآءَاللّٰه आहिस्ता आहिस्ता आप का 72 नेक आमाल पर भी अमल हो जाएगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

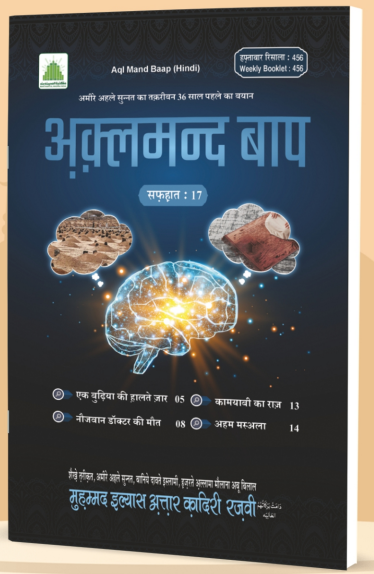

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025